रिकॉर्डः– ओम नमो शिवाय... ओमशांति प्रातःक्लास 18/12/67

मीठे–2 बच्चों को बाप ने स्मृति दिलाई है कि सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है और जो नहीं जानते हैं उनको बाप ने ही कहा है कि कैसे ब्लाइंड फैथ में चल रहे हैं। अब तुम बच्चे जानते हो कि हमने बाप से जो कुछ भी जाना है वो दुनिया में कोई भी नहीं जानते हैं। बाप ने जो भी रास्ता ब(ता)या है यह वो ही कल्प पहले वाला रास्ता है, जिससे ही पावन बनकर विश्व का मालिक बनते हैं। हम सो पूज्य थे। परमात्मा के लिए कहेंगे कि आप ही पूज्य सो पुजारी? नहीं। जो पूज्य विश्व का मालिक बनते हैं वो ही फिर पुजारी बनते हैं। स्मृति में आया है कि यह तो बिल्कुल ही राइट बातें हैं। सृष्टि की आदि–मध्य–अंत का समाचार बाप ही सुनाते हैं। और किसी को भी ज्ञान सागर नहीं कहा जा सकता है। कृष्ण की भी यह महिमा नहीं है। कृष्ण नाम तो शरीर का ही है ना। शरीर में रहने वाली आत्मा में तो यह सारा ज्ञान हो नहीं सकता। अभी तुम समझते हो कि उनकी आत्मा ज्ञान ले रही है। यह तो वण्डरफुल बातें हैं ना। बाप बिना कोई भी समझा ना सके। ऐसे तो बहुत ही साधु–संत भिन्न–2 प्रकार के हठयोग आदि सिखाते हैं। वो सब है भक्तिमार्ग। भक्तिमार्ग और ज्ञानमार्ग की महिमा भी बच्चों को समझाई है। सतयुग में तो तुम कोई की भी पूजा नहीं करते हो। वहाँ पर तो तुम पुजारी नहीं बनते हो। उनको तो कहा ही जाता है पूज्य देवी–देवताएँ। थे। अब नहीं हैं। वो ही पूज्य अब फिर पुजारी बने हैं। बाप कहते हैं कि यह भी तो पूजा करते थे ना। सारी दुनिया ही इस समय तो पुजारी है। नई दुनिया में तो एक ही पूज्य देवता धर्म रहता है। बच्चों को स्मृति में आया कि बरोबर ड्रामा के प्लान अनुसार यह बिल्कुल राइट है। गीता एपिसोड बरोबर है। सिर्फ गीता में नाम बदल दिया है, जिसको समझाने के लिए ही तुम मेहनत करते हो। 2500 वर्षों से गीता कृष्ण ही की समझते आते हैं। अब एक ही जन्म में समझ जावें कि नहीं, गीता शिव भगवान ने सुनाई है, समय तो लगेगा ही ना। भक्ति का भी समझाया है कि झाड़ कितना लम्बा–चौड़ा है। तुम लिख सकते हो कि बाप हमको सीखा रहे हैं। गीता में कृष्ण का नाम डालने से वो झूठी गीता तुम पढ़ते आते हो। गीता का भी कहेंगे कि शिव जयंती सो ही गीता जयंती। कृष्ण जयंती सो गीता जयंती तो कह ही नहीं सकते हैं। जिनको निश्चय हो जाता है तो उस निश्चय से ही समझते भी हैं। निश्चय ही नहीं है (तो) खुद भी मूँझते रहते हैं कि कैसे समझावें। कोई हंगामा तो नहीं हो जावेगा। निडर तो अभी हुए ही नहीं हैं ना। निडर तो तब होवें जबकि पूरा देही–अभिमानी बन जावें। डरना तो भक्तिमार्ग में होता है। तुम सभी तो हो ही महावीर। दुनिया भर में यह कोई भी नहीं जानते हैं कि माया पर जीत कैसे पहनी जावे। तुम बच्चों को ही अब स्मृति में आया है। आगे भी बाप ने कहा था कि मनमनाभव। पतित–पावन बाप ही आकर यह समझाते हैं। भल गीता में अक्षर है; परन्तु ऐसे ही कोई भी समझते नहीं हैं। बाप कहते हैं कि बच्चे, देही–अभिमानी भव। अक्षर तो है ही ना गीता में आटे में लूण के मिसल। हर एक बात का बाप निश्चय बिठाते हैं। निश्चय बुद्धि विजयन्ति। तुम अभी बाप से वर्सा ले रहे हो। बाप कहते हैं कि गृहस्थ व्यवहार में भी ज़रूर ही रह(ना) है। सभी को तो यहाँ पर आकर बैठने की दरकार नहीं है ना। सर्विस करनी है, सेन्टर्स खोलने हैं। तुम तो हो ही सैलवेशन आर्मी। ईश्वरीय मिशन हो ना। पहले तो क्षुद्र, मायावी मिशन के थे। अभी तो तुम ईश्वरीय मिशन के बने हो। तुम्हारा महत्व बहुत है। इन ल०ना० की क्या महिमा है। जैसे राजाएँ होते हैं वैसे ही यह भी राजाई करते थे। बाकी इनको कहेंगे सर्वगुण सम्पन्न..., विश्व का मालिक; क्योंकि उस समय पर तो और कोई राजा ही नहीं होता है। अभी तो बच्चे समझ गए हैं कि वो विश्व का मालिक कैसे बनते हैं। अभी तो हम ही सो देवता बनते हैं तो इनको ही माथा क्यों झुकावें? तुम तो नॉलेजफुल बन गए हो। जिनको तो नॉलेज ही नहीं है वो तो माथा टेकते रहते हैं। तुम तो सभी के ऑक्युपेशन को अभी जान गए हो। चित्र रॉंग कौन से हैं, राइट कौन से हैं वो भी तुम जान गए हो। समझा सकते हो। रावण राज्य पर भी समझा सकते हो कि यह रावण राज्य है, उसको ही

अब आल(आग) लग रही है। भंभोर को आग लग रही है दिखाते हैं ना। भंभोर विश्व को कहा जाता है। जो अक्षर गोय(गाए) जाते हैं उन पर ही समझाया जाता है। भक्तिमार्ग में तो अनेकों चित्र बनाए हैं। वास्तव में असली होती है शिवबाबा की पूजा। फिर ब्र०वि०शं० की। त्रिमूर्ति जो बनाते हैं वो तो राइट है। फिर यह ल०ना०, बस। त्रिमूर्ति में तो ब्रह्मा–सरस्वती भी आ जाते हैं। भक्तिमार्ग में तो अंधश्रद्धा से कितनी पूजा करते हैं। कितने चित्र आदि बनाते हैं। हनुमान की भी पूजा करते हैं। तुम भी अभी महावीर बनते रहते हो ना। मंदिर में भी कोई की हाथी पर, कोई की घोड़े पर सवारी दिखाते हैं। अब ऐसी सवारी थोड़े ही है। बाप कहते हैं महारथी। तो अर्थ निकालते हैं कि महारथी माना ही हाथी पर सवारी। इन्होंने तो फिर उस हाथी की सवारी बना दी है। यह भी समझाया है कि कैसे गज को ग्राह खाता है। बाप समझाते हैं कि जो महारथी होता है उनको माया ग्राह हप कर लेती है। तुमको तो अब ज्ञान की समझ आई है कि अच्छे–2 महारथियों को भी माया ग्राह हप कर लेती है, खा जाती है। यह है ज्ञान की बातें। इनका वर्णन कोई और कर नहीं सकता। शास्त्रों में लिखा हुआ है कि हनुमान पवन से पैदा हुआ। यह सारी तो हैं ही अंधश्रद्धा की बातें। ऐसी बातें हैं थोड़े ही। यह तो है ही सारा बंदर सेना। रावण का राज्य सारे विश्व में है। तुम्हारी भी चलन बंदर मिसल थी। बाप कहते हैं कि अब निर्विकारी बनना है। दैवीगुण भी धारण करने हैं। कल्प–2 तुम दैवी गुणों की धारणा करते आए हो। मुख्य बात तो एक ही बाप कहते हैं कि काम (महाशत्रु) है। इसमें ही है मेहनत। इन पर ही तुम विजय पाते हो। प्रजापिता का बने तो भाई–बहन हो गए। वास्तव में तो असल में तो तुम हो आत्माएँ। आत्मा, आत्मा से बात करती है। आत्मा ही कानों से सुनती है। यह याद रखना पड़े, हम आत्मा को सुनाते हैं, देह को नहीं। असल में तो हम आत्माएँ भाई–2 हैं। फिर आपस में भाई–बहन भी हैं। सुनाना तो भाई को ही होता है ना। दृष्टि आत्मा तरफ जानी चाहिए। हम भाई को सुनाते हैं। भाई सुनते हो? हाँ, मैं आत्मा सुनता हूँ। बिकानेर में एक बच्चा है जो सदैव ही आत्मा–आत्मा कहकर ही लिखता है। मेरी आत्मा शरीर द्वारा लिख रही है। मुझ आत्मा का यह विचार है। मेरी आत्मा यह करती है। तो यह आत्माभिमानी बनना तो ही मेहनत की बातें हैं ना। मेरी आत्मा नमस्ते करती है। जैसे बाबा कहते हैं कि रूहानी बच्चे! तो भृकुटि की तरफ ही देखना पड़े। तुम्हारी भी नज़र आत्मा तरफ पड़नी चाहिए। आत्मा मस्तिष्क के बीच में है। शरीर पर नज़र पड़ने से विघ्न आते हैं। आत्मा से बात करनी है। आत्मा को ही देखना है। देह अभिमान को छोड़ो। आत्मा भी ऐसे ही कहती है– नमस्ते, बाबा। जानते हो कि यहाँ पर बाप भृकुटि के बीच में बैठा है। उनको ही हम नमस्ते करते हैं। यह (टेव) डालना तो मेहनत की बात है। बुद्धि में यह ज्ञान है कि हम आत्मा है। आत्मा ही सुनती है। यह ज्ञान आगे नहीं था। यह देह मिली है पार्ट बजाने लिए। इसलिए देह पर ही नाम रखा जाता है। इस समय तुमको देही–अभिमानी बनकर वापस जाना है। यह नाम धरा है पार्ट बजाने लिए। नाम बिना तो कारोबार चल ही नहीं सके। वहाँ पर भी तो कारोबार चलेगी ना; परन्तु तुम सतोप्रधान बन जाते हो। इसलिए वहाँ पर कोई भी विकर्म नहीं बनेंगे। ऐसा काम ही तुम नहीं करेंगे जो कि विकर्म बने। माया का राज्य ही नहीं। अब बाप कहते हैं तुम आत्माओं को वापस जाना है। यह तो पुराने शरीर हैं। फिर जावेंगे सतयुग–त्रेता में। वहाँ पर भी फिर आहिस्ते–2 कला उतरती है। सत–त्रेता में तो एक है ही देवी–देवता धर्म। लड़ाई–झगड़ा तो कुछ भी नहीं है। वहाँ ज्ञान की दाकर(दरकार) नहीं है। यहाँ पर तुमको ज्ञान कौन देते हैं; क्योंकि दुगर्ति को पाए हुए हो। कर्म तो वहाँ पर भी करना होता है; परन्तु वो अकर्म हो जाता है। अब बाप कहते हैं कम कार डे, आत्मा याद बाप को करे। आत्मा ही सब कुछ करती है ना। नाम शरीर पर रखते हैं। उनसे ही कारोबार चलती है। वहाँ पर पतित कोई भी होते नहीं हैं। तुम्हारे विकर्म बनते ही नहीं। रावण राज्य ही नहीं होता। तुम पावन हो तो सारे कारोबार भी पावन होते हैं। सतोप्रधान रावण राज्य में तुम्हारी कारोबार ही खोटी हो जाती है। इसलिए ही मनुष्य

तीर्थ यात्रा आदि पर जाते हैं। सतयुग में तुम कोई पाप नहीं करते जो तीर्थ यात्रा आदि पर जाना पड़े। तुम समझते हो हम सतोप्रधान थे। अभी तमोप्रधान बने हैं। वहाँ हम जो भी काम करते हैं सत्य ही करते हैं। सत्य का वर मिल गया है। विकार की वहाँ बात ही नहीं। कारोबार में भी झूठ की दरकार नहीं रहती। यहाँ तो लोभ होने कारण चोरी, ठगी आदि करते हैं। वहाँ यह बातें होतीं नहीं। ड्रामा अनुसार तुम ऐसे फूल बन जाते हो। वह है ही निर्विकारी दुनिया। यह है विकारी दुनिया। सारा खेल बुद्धि में है। इस समय ही प्योर बनने लिए मेहनत करनी पड़ती है। योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो। योगबल है मुख्य। बाप कहते हैं भक्तिमार्ग के यज्ञ–तप आदि से कोई भी मेरे को प्राप्त नहीं होते। सबको सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो में जाना ही है। यह आदि–मध्य–अंत का ज्ञान बाप के सिवाय कोई दे न सके। ज्ञान बड़ा सहज और रमणीक है। मेहनत भी है। इस योग की ही महिमा है, जिससे तुमको सतोप्रधान बनना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने का रास्ता बाप ही बतलाते हैं। दूसरा कोई यह ज्ञान दे न सके। भल कोई चंद्रमा तक चले जाते हैं। कोई पानी से चले जाते हैं; परन्तु वह कोई राजयोग नहीं है। नर से नारायण तो नहीं बन सकते। यहाँ तुम समझते ... आदि सनातन देवी–देवता धर्म के थे, जो फिर अब बन रहे हैं। स्मृति आई है। बाप ने कल्प पहले भी यह समझाया था। बाप कहते हैं निश्चय बुद्धि ही विजयन्ति। निश्चय नहीं तो वह सुनने आवेंगे नहीं। निश्चय बुद्धि से फिर संशय बुद्धि भी बन जाते हैं। बहुत अच्छे–2 महारथी भी संशय में आ जाते हैं। माया का थोड़ा तूफान आने से देहाभिमान आ जाता है। यह बापदादा दोनों कम्बाइंड हैं। शिवबाबा ज्ञान देते हैं। फिर चले जाते हैं वा क्या होता है वह कौन बतावे। बाबा से पूछें क्या आप सदैव हो या चले जाते हो? बाप से तो यह नहीं पूछ सकते हो ना। बाप कहते हैं मैं तो तुमको रास्ता बताता हूँ पतित से पावन होने का। आऊँ और जाऊँ। मुझे तो बहुत काम करने पड़ते हैं। बच्चों पास भी जाता हूँ। उनसे कार्य कराता हूँ। मैं तो कोई में भी प्रवेश कर सकता हूँ। बच्चियाँ कहती भी हैं बाबा ने आकर मुरली चलाई। मेरे में तो ताकत नहीं थी। बाप कहते हैं क्यों नहीं, कोई अच्छा है, उनका कल्याण करना है तो मुझे भी प्रवेश होकर करना पड़ता है। कल्प पहले भी कल्याण उनका मेरे द्वारा ही हुआ था। बच्चे से हुआ या मेरे से, उनका तो कल्याण हो जाता है। इसमें कोई संशय न लाए। अपना काम है बाप को याद करना। संशय में आने से गिर पड़ेंगे। माया थप्पड़ ज़ोर से मार देती है। बाप ने कहा है बहुत जन्मों के अंत के जन्म के भी अंत में मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। बच्चों को निश्चय है बरोबर बाप ही हमको ज्ञान दे रहे हैं। और कोई दे न सके। फिर भी इस संशय से कितने गिर पड़ते हैं। यह बाबा जानते हैं। तुमको पावन बनना है तो बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। और कोई बातों में नहीं पड़ो। यह संशय की बात करते हैं तो समझ में आता है पूरा निश्चय नहीं है। पहले तो एक ही बात को समझो जिससे तुम्हारा पाप नाश होने का है। बाकी वाह्यात बातें करने की दरकार ही नहीं। बाप की (याद) से ही विकर्म विनाश होंगे। फिर और बातों में क्या जाते हो। देखो, कोई प्रश्न–उत्तर आदि में मूँझता है तो वहाँ थमा देना चाहिए। पहले तो एक ही बात को समझो, जिससे तुमको पतित से पावन बनना है। वह पुरुषार्थ करते रहो। संशय में आया तो छोड़ देंगे। फिर कल्याण ही न होगा। नब्ज़ देखी जाती है। संशय में हैं तो फिर एक प्वाइंट पर खड़ा (कर) देना है। बहुत युक्ति से समझाना पड़ता है। बच्चों को यह पहले निश्चय हो बाबा आया हुआ है। हमको पावन बना रहे हैं। यह तो खुशी की बात है। स्टूडेंट लाइफ इज़ द बेस्ट लाइफ कहा जाता है; परन्तु सब स्टूडेंट्स को थोड़े ही खुशी रहती है। न पढ़ेंगे तो नापास हो जावेंगे। उनको खुशी भी क्यों आवे? स्कूल में पढ़ाई तो एक ही होती है। फिर कोई पढ़कर लाखों की कमाई करते हैं, कोई 5–10 रुपया कमाते हैं। तुम्हारी एम–ऑब्जेक्ट है ही नर से नारायण बनने की। राजाई स्थापन होती है ना। तुम मनुष्य से देवता बनेंगे। देवताओं को तो बड़ी राजधानी है। उसमें ऊँच पद पाना वह फिर है पढ़ाई और एक्टविटी (पर)। एक्टविटी बड़ी अच्छी चाहिए। बाबा अपने लिए भी कहते हैं अभी कर्मातीत अवस्था नहीं बनी है। हमको भी सम्पूर्ण बनना है।

अभी बने नहीं हैं। 8–9 वर्ष टाइम तो पड़ा है ना। ज्ञान तो बड़ा सहज है। बाप को याद करना भी सहज है; परन्तु जब करे ना। बाबा कहते हैं मैं भी नहीं कर सकता हूँ। अभी कर्मातीत अवस्था आई थोड़े ही है जो गपोड़ा मारें। कोई–2 कहते हैं हम तो नित्य याद करते हैं। बाप कहते हैं कहाँ ज़रूर भूल है। नित्य याद करते हो तो बाकी क्या चाहिए। देह का भी भान रहे नहीं। यह ही मुख्य बात है। तुम नंगे आए थे, नंगे जाना है। देह की भी याद न रहे। इसमें तो टाइम लगता है। इतनी राजधानी भी जब स्थापन हो जावे ना। बाप हर बात समझाते रहते हैं। बच्चों की बुद्धि में है। आधा कल्प है ज्ञान, फिर आधा कल्प है भक्ति। तुम खुद भी समझते हो सम्पूर्ण ज्ञान न होने कारण डर भी लगता है। ...ह छूट भी जाए, भागन्ति हो जाए। कोई तो ऐसे भी कहते हैं हमको मास बाँध कर दो तो हम जाए अलग रहें। कोई के मुख में आ जाता है, कोई अंदर में कहते हैं। हाँ, रहते भी वह बाप की कशिश नहीं होती। समझते हैं इससे तो बाहर में जाकर रहें। संशय हो जाता है ना। यह भी ड्रामा में नूँध है। बच्चों को तो बड़ी मस्ती रहनी चाहिए, हमको बाप मिला है। वह ज्ञान का सागर है। वह आते हैं तो आकर ज्ञान देते हैं। यह है ही ज्ञानमार्ग। वह है भक्तिमार्ग। इसको अज्ञान मार्ग ही कहा जाता है। तुम अभी समझते हो इनसे हम सीढ़ी नीचे उतरते ही आए हैं। अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर फिर वापस जाते हैं। संगमयुग ज़रूर आना चाहिए, नहीं तो सतयुग आवे कैसे। मनुष्य तो इन बातों में ख्याल भी नहीं करते हैं; क्योंकि वह तो आयु ही लाखों वर्ष समझ लेते हैं। तुम्हारी बुद्धि कहती है बरोबर कलियुग के बाद सतयुग आवेगा। यह रूहानी यात्रा बाप ही आए कर सिखलाते हैं। बाप तो पूरी समझ देते हैं। न समझते हैं वह भी होना ही है। यह नम्बरवार सारी राजधानी स्थापन होनी ही है। कितने नम्बरवार होंगे। बच्चे समझते हैं अवस्था अनुसार ही जन्म मिलता है। समझाते तो बहुत हैं। बहुत अच्छे नामी–ग्रामी उनको भी संशय आ जाता है। कब–2 एक/दो में बात करते हैं तो यह बात समझ में नहीं आती। हम कहाँ फँस तो नहीं पड़े हैं। कोई जादूगरी तो नहीं। समझ लेना है संशय बुद्धि विनश्यन्ति। निश्चय बुद्धि विजयन्ति। संशय बुद्धि भी होकर बहुत चले जाते हैं। चले भी गए हैं। घड़ी–2 गिर पड़ते हैं। तो फिर चले जाते हैं। फिर उन्हों के चित्र भी खतम कर देते हैं। ऐसे ढेर समाचार बाप के पास आते हैं। विकार में गया। खलास। कोई फिर आ भी जाते हैं। यह तो बुद्धि से समझ सकते हैं। बरोबर ऐसा होता है। आस्ते–2 कर बहुत विकारी हो जावेंगे। इस समय तुम मैनॉरिटी हो तो विघ्न जास्ती पड़ते हैं। मैजॉरिटी हो जावेगी फिर विघ्न कम हो जावेंगे। अभी तुम समझते हो (हम) तो जाते हैं अपने घर। मेहनत भी अच्छी करनी पड़े। पद कोई कम थोड़े ही हैं। बुद्धि भी कहती है फिर यह ल०ना० की राजधानी ज़रूर आवेगी; परन्तु इन बातों पर विचार–सागर–मंथन भी तुम्हारा ही होता है। और कोई का तो ज़रा भी नहीं चलता है। अच्छा।

बाप बच्चों को ही राजधानी का वर्सा देते हैं कल्प पहले मुआफिक। जैसे कल्प–2 देते आए हैं। पुरुषार्थ भी तुम्हारा ऐसे ही चलता है। ड्रामा तुमको पुरुषार्थ ज़रूर करावेगी। पुरुषार्थ बिगर तो रह नहीं सकेंगे। इसको कहा जावेगा ड्रामा ने पुरुषार्थ कराया। पुरुषार्थ बिगर तो प्रारब्ध नहीं बनती। पुरुषार्थ बड़ा कहा जाता है। पुरुषार्थ से प्रारब्ध मिलती है। सबसे जास्ती पुरुषार्थ है अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना। यह घड़ी–2 याद करना इसमें ही मेहनत है। बाप ही राय देते हैं मुझ अपने बाप को, धणी को याद करो। मैं घर का धणी हूँ ना। रचता ही बैठ रचना के आदि–मध्य–अंत का नॉलेज सुनाते हैं। अभी तुम बाप द्वारा जानते हो और पद पाते हो। ड्रामा में पार्ट ही उनका है। और कोई सुना न सके और कल्प पहले वाले ज़रूर आकर समझेंगे। राजधानी स्थापन की हुई है। सब ज़रूर आवेंगे। थोड़ी भी बाप के महावाक्य सुनी तो ज़रूर आ जावेंगे। आत्मा ने जो ज्ञान सुना है वह कब भूल नहीं सकता। ज्ञान का विनाश नहीं होता। सभी आवेंगे। जो जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ऊँच पद पावेंगे। शांतिधाम–सुखधाम को याद करना है। बाकी दुखधाम को भूलना है। अच्छा।

अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग और नमस्ते। नमस्ते। ओम।